International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555&I2OR: 5.105), Volume 08, No. 01(III) (Special Issue), January- March, 2026, pp. 83-87

बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत–रूस रणनीतिक सम्बन्ध

डॉ. गिरीश चन्द्र पचौली*

असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, एल.एस.एम.परिसर पिथौरागढ।

*Corresponding Author: girishpachauli1984@gmail.com

सार

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के गतिशील क्षेत्र में, भारत–रूस सम्बन्ध एक दुर्लभ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं–एक ऐसी साझेदारी जो शीत युद्ध की जटिलताओं से उबरकर एकध्रुवीय विश्व के दौर से गुजरी और अब एक नव–बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था में अपनी प्रासंगिकता सिद्ध कर रही है। यह सम्बन्ध केवल एक राजनयिक गठजोड़ नहीं, बल्कि एक ''विशेष एवं विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी के रूप में विकसित हुआ है, जिसकी नींव गहरे विश्वास, रणनीतिक अनुकूलता और ठोस हितों के अभिसरण पर टिकी है। सोवियत काल से ही रूस (तत्कालीन सोवियत संघ) भारत का एक प्रमुख रक्षा साझेदार रहा है, जिसने भारत की सैन्य क्षमताओं एवं सामरिक स्वायत्तता के निर्माण में अतुलनीय योगदान दिया है। वर्तमान समय में, जब वैश्विक शक्ति सन्तुलन तेजी से बदल रहा है, अमेरिका–चीन प्रतिस्पर्धा तीव्र हो रही है और यूक्रेन संकट जैसी घटनाओं ने अन्तर्राष्ट्रीय गठबन्धनों को नई चुनौतियाँ प्रदान की हैं, ऐसे में भारत–रूस सम्बन्धों की मजबूती एवं लचीलापन पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। यह शोध पत्र इसी पृष्ठभूमि में भारत–रूस रणनीतिक सम्बन्धों का, विशेष रूप से उनके सैन्य एवं रक्षा आयामों के केन्द्र में रहकर, गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह दर्शाने का प्रयास करता है कि कैसे यह ''काल–परीक्षित'' साझेदारी बदलते वैश्विक परिदृश्य में नई चुनौतियों का सामना करते हुए भी भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा एवं रणनीतिक स्वायत्तता के लिए एक महत्वपूर्ण स्तम्भ बनी हुई है।।

शब्दकोश: *भारत–रूस सम्बन्ध, रणनीतिक साझेदारी, रक्षा सहयोग, सैन्य प्रौद्योगिकी, सामरिक स्वायत्तता, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, भू–राजनीति।*

प्रस्तावना

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एक विश्वास का निर्माण

भारत–रूस सम्बन्धों की मजबूत नींव शीतयुद्ध के दौरान रखी गई, जब तत्कालीन सोवियत संघ ने भारत की औद्योगिकीकरण एवं रक्षा आधुनिकीकरण की आकांक्षाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1971 की मैत्री संधि ने इस सम्बन्ध को एक औपचारिक रणनीतिक आयाम प्रदान किया। सोवियत संघ ने भारत को अन्य पश्चिमी देशों की तुलना में अधिक अनुकूल शर्तों पर, और अक्सर राजनीतिक प्रतिबद्धता के साथ, उन्नत सैन्य प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण में सहयोग किया। मिग विमान, टी–72 टैंक और सबमरीन जैसी प्रणालियों की आपूर्ति ने भारतीय सशस्त्र बलों की रीढ़ का निर्माण किया। इस दौरान सोवियत संघ ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत के हितों, विशेषकर कश्मीर मुद्दे पर, का लगातार समर्थन किया, जिससे द्विपक्षीय विश्वास और गहरा हुआ। सोवियत संघ के विघटन के बाद, 1990 का दशक रूस के लिए आर्थिक संकट और भारत के लिए उदारीकरण का दौर था। इस कठिन समय में भी दोनों देशों ने अपने रक्षा सम्बन्धों को बनाए रखा और 2000 में रणनीतिक

Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.
A Special Issue for the papers accepted for publication in the International Multidisciplinary Conference on India's Foreign Policy and International Relations:A Future Roadmap (IFPIR-2026) (Hybrid Mode)(22-24 January 2026) Organized by Geo-Politics & Defence Study Research Cell, Faculty of Arts, Education and Social Sciences, Jai Narain Vyas University, Jodhpur, Rajasthan.

साझेदारी की घोषणा के साथ इसे नए सिरे से परिभाषित किया। 5–6 दिसम्बर, 2025 को हुए 23वें भारत–रूस वार्शिक शिखर सम्मेलन ने इन सम्बन्धों को और अधिक मजबूती प्रदान की है।यह ऐतिहासिक निरन्तरता ही इस सम्बन्ध की सबसे बड़ी ताकत रही है।

शोध पद्वति

इस शोध पत्र का उद्देश्य बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत–रूस रणनीतिक सम्बन्धों, विशेषकर उनके सैन्य एवं रक्षा आयामों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक गुणात्मक अनुसंधान पद्वति को अपनाया गया है। यह अध्ययन एक वर्णनात्मक एवं वि लेशणात्मक भाोध डिजाइन पर आधारित है। शोध के लिए आव यक डेटा विश्वसनीय द्वितीयक स्रोतों जैसे कि– शैक्षणिक ग्रन्थ, पियर–रिव्यू जर्नल लेख, थिंक टैंक रिपोर्ट एवं नीति विश्लेषण, सरकारी दस्तावेज एवं अधिकारिक बयान, सांख्यिकीय डेटाबेस, प्रतिश्ठित समाचार मिडिया से एकत्र किया गया है।

रक्षा एवं सैन्य सहयोग सम्बन्धों का मूल आधार

रूस के साथ हमारा पारंपरिक रिश्ता रहा है, जो अब 'स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप' का रूप ले चुका है। आज रूस के साथ केवाल व्यापार ही नहीं, बल्कि तकनीकी–हस्तांतरण, साझा भाोध, साझा उत्पादन के साथ कई असैन्य और सैन्य क्षेत्रों में तकनीक विकसित करना भारत की प्राथमिकता में है।रक्षा सहयोग भारत–रूस सम्बन्धों का सबसे मजबूत और स्थायी स्तम्भ है। भारतीय सशस्त्र बलों की रणनीतिक क्षमताओं में रूसी हथियार प्रणालियों की उपस्थिति लगभग सर्वव्यापी है।प्च्त्प्के आँकड़ों के अनुसार, 2000–2020 की अवधि में भारत के कुल आयातित शस्त्रों में रूस का हिस्सा लगभग 65ः रहा है। यह सहयोग केवल विक्रेता–ग्राहक के सम्बन्ध तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें संयुक्त अनुसंधान, विकास, उत्पादन एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण शामिल रहा है।

सहयोग के प्रमुख क्षेत्र हैं–

- **वायु शक्ति :** सुखोई Su-30MKI लड़ाकू विमानों का भारत में संयुक्त उत्पादन, डपळ–29 अपग्रेडेशन, और प्स–76/78 टेंकर/ट्रांसपोर्ट विमानों की आपूर्ति, पाँचवीं पीढी के एसयू–57 स्टेल्थ फाइटर जेट्स की आपूर्ति।
- **नौसेना शक्ति :** किलो–श्रेणी की पनडुब्बियों का पट्टे पर देना (लीज) और तकनीकी हस्तांतरण, तलवार–श्रेणी की फ्रिगेट्स, और विराट विमानवाहक पोत का मॉडर्नाइजेशन।
- **स्थल सेना :**T-90S भीष्म टैंकों का भारत में निर्माण, बीएमपी–2 पैदल सेना से लड़ने वाले गाड़ियों का उत्पादन, और अत्याधुनिक S–400 ट्रायम्फ वायु रक्षा प्रणाली की आपूर्ति का ऐतिहासिक करार।
- **अन्तरिक्ष एवं मिसाइल प्रौद्योगिकी :** GLONASS नेविगेशन सिस्टम में सहयोग और संयुक्त मिसाइल विकास परियोजनाएँ (जैसे ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल) इस साझेदारी की रणनीतिक गहराई को दर्शाती हैं।

यह सैन्य–तकनीकी सहयोग भारत को पश्चिमी देशों की तुलना में अधिक अनुकूल एवं जोखिम–रहित शर्तों पर उन्नत प्रौद्योगिकी प्राप्त करने में सक्षम बनाता है, जो उसकी ''रणनीतिक स्वायत्तता'' ;जतंजमहपब ।नजवदवउलद्धकी नीति का एक महत्वपूर्ण साधन है।

रणनीतिक स्वायत्तता एवं बदलती वैश्विक गतिशीलता

21वीं सदी में भारत की विदेश नीति का केंद्रीय सिद्धांत ''रणनीतिक स्वायत्तता'' रहा है, जिसका अर्थ है सभी महाशक्तियों के साथ संतुलित सम्बन्ध बनाकर अपने राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखना। इस संदर्भ में, रूस के साथ सम्बन्ध भारत के लिए एक महत्वपूर्ण ''सन्तुलनकारी कारक''(Balancing factor) का काम करता है। एक ओर जहाँ भारत ने अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया के साथ क्वाड (फन्।क्) जैसे तंत्रों के माध्यम से इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में सहयोग को गहन किया है, वहीं दूसरी ओर वह रूस के साथ अपने पारम्परिक रक्षा एवं रणनीतिक

गठजोड़ को भी बनाए रखना चाहता है। यह द्वि–सदिशता (bi-directionality) भारत को अमेरिका–चीन प्रतिस्पर्धा के बीच फँसने से बचाती है और उसे दोनों पक्षों के साथ बातचीत की शक्ति प्रदान करती है।

हालाँकि, यूक्रेन संकट ने इस सन्तुलन को बनाए रखने की चुनौती को बहुत जटिल बना दिया है। पश्चिमी प्रतिबंधों के बीच रूस की अंतर्राष्ट्रीय अलग–थलगी और भारत के बढ़ते पश्चिमी सहयोग ने एक नया तनाव पैदा किया है। भारत ने यूक्रेन युद्ध में तटस्थ रुख अपनाया और रूसी तेल का बड़े पैमाने पर आयात जारी रखा, जिसकी पश्चिम में आलोचना भी हुई। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत अपनी रणनीतिक स्वायत्तता की नीति पर दृढ़ है और वह किसी भी बाहरी दबाव में आए बिना अपने राष्ट्रीय हितों (ऊर्जा सुरक्षा, रक्षा आपूर्ति शृंखला) को प्राथमिकता देता है। यही रुख भारत–रूस सम्बन्धों का लचीलापन और भविष्य की दिशा को निर्धारित करेगा।

बहुपक्षीय एवं क्षेत्रीय सहयोग के मंच

भारत और रूस विभिन्न बहुपक्षीय मंचों पर नियमित रूप से सहयोग करते हैं, जो उनकी साझा बहुध्रुवीय विश्व की दृष्टि को दर्शाता है।

- **ब्रिक्स (BRICS) :** दोनों देश इस समूह के संस्थापक सदस्य हैं और वैश्विक वित्तीय संस्थानों में सुधार, आतंकवाद विरोध और वैकल्पिक भुगतान प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करते हैं।
- **शंघाई सहयोग संगठन (SCO) :** यह मंच मध्य एशिया में सुरक्षा एवं आर्थिक सहयोग के लिए महत्वपूर्ण है। भारत और रूस दोनों यहाँ आतंकवाद, उग्रवाद और अलगाववाद से लड़ने के लिए समन्वय करते हैं। यह मंच भारत के लिए यूरेशियाई क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने का एक माध्यम भी है।
- **संयुक्त राष्ट्र (UN) :** हालाँकि रूस अक्सर पश्चिम के विरोध में खड़ा होता है और भारत एक संतुलित रुख अपनाता है, फिर भी कई वैश्विक मुद्दों पर दोनों देशों की स्थिति नजदीक होती है।

इन मंचों पर सहयोग केवल राजनयिक नहीं है, बल्कि यह एक बड़े भू–रणनीतिक उद्देश्य–पश्चिमी प्रभुत्व के विकल्प के निर्माणकी सेवा करता है।

चुनौतियाँ एवं भविष्य की सम्भावनाएँ

भारत–रूस साझेदारी के समक्ष कई गम्भीर चुनौतियाँ उभरी हैं–

- **भारत–अमेरिका सम्बन्धों का उन्नयन :** अमेरिका के साथ भारत का रक्षा सहयोग (जैसे COMCASA, LEMOA, BECA समझौते) बढ़ रहा है। अमेरिकी हथियार प्रणालियों (जैसे Apache,Chinook, P-8I) की खरीद और क्वाड में सक्रिय भागीदारी से रूस में यह चिंता है कि कहीं भारत पश्चिम की ओर न झुक जाए।
- **रूस–चीन की बढ़ती निकटता :** यूक्रेन संकट के बाद रूस की चीन पर निर्भरता बढ़ी है। भारत के लिए यह चिंता का विषय है, क्योंकि चीन उसका प्राथमिक सुरक्षा चुनौती है। किसी भी रूसी–चीनी सैन्य गठजोड़ से भारत की सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।
- **रक्षा आधुनिकीकरण में विविधिकरण :** भारत अब ''आत्मनिर्भर भारत'' (Atmanirbhar Bharat) के तहत रक्षा उत्पादन में स्वदेशीकरण और आपूर्तिकर्ताओं के विविधिकरण पर जोर दे रहा है। इससे रूसी हथियारों पर ऐतिहासिक निर्भरता कम हो सकती है।
- **प्रतिबंधों का जोखिम :** अमेरिका का काट्सा(CAATSA) 'काउंटरिंग अमेरिकाज एडवर्सरीज थ्रू सेंक्शन्स ऐक्ट' कानून भारत पर रूस से S–400 जैसे बड़े सौदों को रद्द करने का दबाव बनाता रहा है, जो द्विपक्षीय सम्बन्धों में एक जोखिम कारक है। यह अमेरिका का एक ऐसा कानून है, जिसका मुख्य उद्देश्य प्रतिद्वंद्वियों पर दंड लगाकर उनकी आक्रामकता को कम करना और अमेरिकी हितों की रक्षा करना है।

इन चुनौतियों के बावजूद, सम्भावनाएँ भी मौजूद हैं–

- **पारम्परिक क्षेत्रों से आगे का सहयोगः**सम्बन्धों को केवल रक्षा सौदों तक सीमित न रखकर, व्यापार, निवेश, परमाणु ऊर्जा, आर्कटिक अनुसंधान और रूस के सुदूर पूर्व में संयुक्त परियोजनाओं जैसे नए क्षेत्रों में विस्तार किया जा सकता है। आर्कटिक क्षेत्र भविश्य की ऊर्जा, खनिज संसाधनों और नए नौवहन मार्ग के लिहाज से अहम बनता जा रहा है। रूस इस क्षेत्र का सबसे बडा खिलाड़ी है व भारत उभरता हुआ ध्रुवीय अनुसंधान भागीदार। इस क्षेत्र का सहयोग भारत की ऊर्जा सुरक्षा, वैज्ञानिक अनुसंधान व वैश्विक महासागरीय कूटनीति में नई भूमिका तय कर सकता है।
- **रुपया–रूबल व्यापार तंत्रः**पश्चिमी वित्तीय प्रणाली से बाहर एक वैकल्पिक भुगतान व्यवस्था विकसित करना दोनों देशों की आर्थिक संप्रभुता को मजबूत करेगा। अन्तर्राश्ट्रीय उत्तर–दक्षिण परिवहन गलियारा (आईएनएसटीसी) ऐसा मार्ग है, जिसकी अहमियत भारत और रूस दोनों के लिए काफी है। समुद्र, रेल और सड़क मार्ग से माल ढलाई को आसान बनाने में यह काफी कारगर होगा।
- **क्षेत्रीय स्थिरता में सहयोगः** अफगानिस्तान जैसे क्षेत्रों में स्थिरता के लिए दोनों देशों के हित साझा हैं, जिस पर मिलकर काम किया जा सकता है।
- **संयुक्त तकनीकी अनुसंधान क्षेत्र :** यह वह क्षेत्र है, जो दोनों देशों को भविश्य की रणनीतिक प्रतिस्पर्द्धा में मजबूती दे सकता है। क्वांटम तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, साइबर सुरक्षा और उन्नत हथियार प्रणालियां आज की भू–राजनीति के मूल तत्व हैं। जहाँ रूस इन क्षेत्रों में वैज्ञानिक दक्षता रखता है, वहीं भारत उभरती हुई डिजिटल भाक्तियों में अग्रणी है। दोनों भाक्तियों मिलकर वैश्विक डिजिटल शासन, साइबर खतरों से मुकाबले व सुरक्षित डाटा अवसंरचना के निर्माण में अहम भूमिका निभा सकती हैं।
- **अंतरिक्ष एवं ऊर्जा सहयोग के क्षेत्र :** ऊर्जा सहयोग के क्षेत्र में भी नए अवसर उभर रहे हैं। परमाणु ऊर्जा, गंगनयान मिशन, चंद्र अन्वेशण, परमाणु रिएक्टरों के क्षेत्र, नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा अवसंरचना विकास में भारत–रूस साझेदारी दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा को सुनि चत कर सकती है। रूस की तकनीकी विशेषज्ञता व विश्वसनीयता और भारत की बढती ऊर्जा आव यकताऐं इस सहयोग व साझेदारी को और अधिक प्रासंगिक बनाती हैं।

निष्कर्ष

भारत–रूस रणनीतिक साझेदारी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में एक स्थायी एवं लचीला सम्बन्ध है, जिसकी जड़ें ऐतिहासिक विश्वास, अनवरत रक्षा सहयोग और बदलते समय में भी बने रहने वाले सामरिक हितों के अभिसरण में गहरी हैं। यह सम्बन्ध भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा वास्तुकला का एक अभिन्न अंग रहा है और उसकी ''रणनीतिक स्वायत्तता'' की नीति को साकार करने में एक महत्वपूर्ण उपकरण सिद्ध हुआ है। हालाँकि वर्तमान वैश्विक भू–राजनीतिक उथल–पुथल, विशेष रूप से यूक्रेन युद्ध और अमेरिका–चीन प्रतिद्वंद्विता, ने इस साझेदारी के समक्ष अभूतपूर्व चुनौतियाँ उत्पन्न की हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए आवश्यक है कि दोनों देश इस सम्बन्ध को केवल एक विक्रेता–ग्राहक के रिश्ते के स्तर से ऊपर उठाकर एक समग्र, भविष्योन्मुखी तकनीकी एवं आर्थिक साझेदारी में रूपान्तरित करें। भारत को अपनी रक्षा आवश्यकताओं के लिए विविधिकरण जारी रखना चाहिए, परन्तु साथ ही रूस के साथ संयुक्त अनुसंधान, सह–विकास और प्रौद्योगिकी सहयोग को नई ऊँचाइयों पर ले जाना चाहिए। बदलता वैश्विक परिदृश्य इस साझेदारी की प्रासंगिकता को कम नहीं करता, बल्कि इसकी प्रकृति को पुनर्परिभाषित करने का आह्वान करता है। एक बहुध्रुवीय विश्व के उभरते युग में, एक स्वायत्त, आत्मविश्वासी भारत और एक संसाधन–सम्पन्न, तकनीकी रूप से सक्षम रूस के बीच एक संतुलित, परस्पर लाभकारी एवं गतिशील साझेदारी न केवल दोनों राष्ट्रों के हित में होगी, बल्कि एशिया तथा विश्व की स्थिरता के लिए भी एक सकारात्मक शक्ति सिद्ध हो सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Bajpai, K., Sagar, R.,& Abraham, I.(Eds.).(2013).India's foreign policy: A reader.Oxford University Press.
2. Donaldson, R. H., & Nadkarni, V.(2018). The foreign policy of Russia: Changing systems, enduring interests (6th ed.). Routledge.
3. Joshi, N.(2010). Reconnecting India and Central Asia: Emerging security and economic dimensions- Central Asia-Caucasus Institute & Silk Road Studies Program.
4. Kartchner, K., & Stefanovich, D.(2021). Russian-Indian defence cooperation: An asymmetric and resilient partnership. Journal of Indo-Pacific Affairs, 4(5), 112–130.
5. Mohan, C. R.(2006). India and the balance of power. Foreign Affairs, 85(4), 17–32. https://doi.org/10.2307/20032040
6. Pant, H. V.(2022). India-Russia ties and a changing global order: The dilemma of recalibrating a 'time-tested' relationship. International Affairs, 98(3), 835–852. https://doi.org/10.1093/ia/iiac059
7. Pant, H. V., & Raman, K.(Eds.).(2018). India and Russia: The story of an enduring partnership. Pentagon Press.
8. Smith, J. M.(2018). The US-India-Russia strategic triangle. Strategic Studies Quarterly, 12(3), 90–115.
9. Stockholm International Peace Research Institute.(2023). SIPRI arms transfers database.https://www.sipri.org/databases/armstransfers
10. हिन्दुस्तान, 09, दिसम्बर, 2025, पेज–06.

❑❑❑